

श्री गणेशाय नमः

अथ मैथिल ब्राह्मण वंश प्रकाश

सूर्य को अर्घ्य देने का मन्त्र

एक. ओउम् एहि सूर्य सहस्रांशी तेजो राशे जगत्पते,
अनुकंपायमां भवत्या गृहणार्घ्यं दिवाकर । ।

दो. जाको कुल जोन है, वनी रहेत है तीन ।
कर शायल के सींग कौं, ऐंटे जमावत कौन । ।

अथ गडेश स्तुती

खर्वं स्थूलतनुं गजेंद्र वदनं लम्बोदरं सुन्दरं प्रशयन्दन्मधु गन्धं सुव्यं
मधुप व्यालोलं गण्डस्थलम् । । दन्ताघात विदारिता । । रित्तरुधरः सिन्दूर शोभा
करम् । । वन्दे शैल सुता सुत । । गणपति सिरप्रदं कामदम्

श्लोक : पुरुषशय मुखं ब्रह्मं । क्षत्रिय तश्य बाहवः
उर्वो वैश्यो भगवतः । पद्धम्यम् शूद्र जायेत्

(श्री मद्धमागवत महा पुराण)

अर्थ : सृष्टी कर्ता ब्रह्माजी है । उनके मुख से ब्राह्मण बाहु एवम्
भुजाओं से क्षत्री उरु- अर्थात् जंघा से वैश्य पाद एवम् चर्णों से शूद्र उत्पन्न
हुए—

श्लोक : दृष्ट्वा सृष्ट्या ब्रह्मणस्य जातिरेका प्रक्रीर्तिता ।
एवं पूर्व जातिरेका देश भेदा द्विधाऽभवत् । ।

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड)

अर्थ : सृष्टी के आरंभ में ब्राह्मणों का एक ही भेद था यानी एक ही

प्रकार के ब्राह्मण थे। अनन्तर देश भेद से दो भेद हो गए। अर्थात् गौड़ और द्राविड़ देश में रहने वाले ब्राह्मण द्रावण कहलाए—

श्लोक : गौड़ द्राविड़ भेदन तयोभेदा दश स्मृता ।

चतुर्शिति विप्राश्चै द्विमेदाश्चै ततोऽभवेत् । ।

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड)

अर्थ : ~~गौड़~~ गौड़, और द्राविण, इन दो भेद वाले ब्राह्मणों से देश भेद हुए अर्थात् पंच गौड़ और पंच द्राविण इन दश भेदों से 84 चौरासी भेद हो गए—

श्लोक : सारश्वताः कान्यकुब्जा गौड़ मैथिल उत्कला ।

पंच गौड़ा इत ख्याता । ।

विन्ध्यस्योत्तर वासिनाः । ।

श्लोक : कर्णाटकाश्च तैलंगा महाराष्ट्रश्च द्राविड़ां

गुर्जराश्चैव पंचते द्राविड़ा विन्ध्य दक्षिणे

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड)

अर्थ : सारश्वत—कान्यकुब्ज,—आदि गौड़, मैथिल—और उत्कल, ये पंच गौड़ कहलाते हैं। और विन्ध्याचल पर्वत के उत्तर देश में निवास करते हैं।

कर्नाटक, तैलंग, महाराष्ट्र, द्राविड़ा, और गुर्जरा, ये पंच द्राविड़ कहलाते हैं। और विन्ध्याचल पर्वत के दक्षिण देशों में निवास करते हैं—

ओझा मैथिल उत्पत्ती

राय सृष्टीकर्ता ब्राह्मजी ने अपने मनसा सृष्टी से अपने वाम चर्ण के अगुछा से राजा दक्षि को उत्तपन्न किया और अपने मुख श्वासा से धर्म को उत्पन्न किया। राजा दक्षि के साठ कन्या उत्पन्न हुई बड़ी कन्या सतीजू भगवान शंकर को विहाई 27 कन्या चंद्रमा को विहाई 13 कन्या राजा कश्यप को विहाई और सात कन्या पवन देव को और दो कन्या अंग्रि ऋषि को अर्थात् 10 दस कन्या धर्म को विहाई इति उनके नाम—

1. अरुन्धति (कक्कव) 2. वसु 3. यामी 4. लंबा 5. भानु 6. मरुत्वति (मृत्युवती) 7. सङ्कल्पा 8. मुहूर्ता 9. संध्या 10. विश्वा

भविष्य पुराण 74 वां अध्याय

लिंग पुराण 63 वां अध्याय

में ऐसा लिखा है। अर्थात् आगे हरिवंशपुराण हरिवंश नामक आदि प्रभ
अध्याय 3 पेज 10 में है सो कहते हैं

अर्थात् दक्षि की पुत्री वसु नाम धर्म को विहाई उससे धर्म के आठ पुत्र पैदा हुए जिनके नाम आप, ~~देवी~~—ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल प्रत्यूष, और प्रभास, ये अष्टसू कहलाए बड़ा पुत्र प्रभास वसू जिनकी भार्या भुवना देवी अंग्रारिषी की पुत्री थी उनका पुत्र तत्वथा हुआ।

श्लोक : बृहस्पतेषु भगिनी अंगि सुता भुवना ब्राह्मवादि जी धर्मश्य सुत प्रभास वसु स्यात् सुभार्या वसू नामक, पठ यश्य चः त्वाथा नाम सुतश्य विश्व कर्ता प्रजापती

(स्कन्ध पुराण प्रभास खंड अं. 7 श्लोक 21)

अर्थ : ब्राह्मजी के मानस पुत्र अंग्रि ऋषि और जिनके दो पुत्र बृहस्पति उत्तय्य एक पुत्री थी भुवना नाम की जो बृहदेवादिनी थी अर्थात् ब्राह्म चार्णी

होकर विचरती थी सो धर्म के बड़े पुत्र प्रभास वसू की भार्या हुई जिनकी कुच्छा से त्वाष्टा नाम पुत्र हुआ जो प्रजा का पती एवम् विश्व का रचेता था (यजुर्वेदसू 10. मं. 22 त्वाष्टा ऋषि के चार पुत्र हुए। जिनके नाम 1 विश्वरूप 2 मौहन्ति 3 रूपहर 4 दमनऋषि ये चार पुत्र हुए—एक पुत्री हुई त्वाष्टी (संज्ञा) जो सूर्य को विहाई।

श्लोक : काशी सकाशी काशा दी शान्ये हयङ्ग देश समीपतः । ।

देशो तिरुहुत नामाश्च । । यत्र राजा निमिः स्थितः । ।

(ब्राह्मण उतपत्ती मार्तण्ड)

अर्थ : श्री काशी क्षेत्र से ईशान कोण में अङ्ग देश के समीप एक तिरुहुत नाम का नगर है। जहां निमि नाम राजा राज्य करते थे

श्लोक : रवीयं गुरुं वशिष्ठस्य मन्य कर्माणि संस्थितम् निमिञ्चलं मिदं
ज्ञत्वा हयानायान्या द्वि जो तमाः यथा त्वाष्टा पुत्रस्य यज्ञं चकार धर्मात्तना । ।
मौक्ष कर्माणि तत्परः । । ततो गुरु समाया तस्त योर्वादों महान भूतः । ।
तयोर्देहो पितृश्च तत्र शापा न्मिथ किलः । । मित्रा वरुणायो वीर्यो देवेश्या
म्रपितामहः । । जातो निमिच तत्रैव द्विजै संजीवत पुनः । । यदा निमिर्द्वि
ज्ञानम् प्राहमा भूतमे देह बन्धनम् । ।

(ब्राह्मण उतपत्ती मार्तण्ड)

अर्थात् (पद्म पुराण सृष्टी खंड अ. 22)

अपने गुरु वशिष्ठ को इन्द्र के यहां यज्ञ कराने गया जानकर इस क्षण भंडुर शरीर का क्या ठिकाना ऐसा जानकर ~~यज्ञ कराने का क्या ठिकाना~~ मौक्ष अभिलाषी राजा निमि ने त्वाष्टा ऋषि के पुत्र विश्वरूप मौहन्ति रूपहर एवम् दमन इन चारों पुत्रों को बुलाकर इन्हीकोयज्ञ आचार्य बनाकर यज्ञ प्रारंभ कर दी जब गुरु वशिष्ठ इंद्रलोक से आए और गुरु बिना

यज्ञ करते देखा तो क्रोधित हुए और श्राप दिया कि राजा निमि तुम्हें अपने क्षत्रिय पन का बड़ा अभिमान है। तुमने मेरी अवज्ञा करके यज्ञ प्रारंभ की इसलिए ये तुम्हें श्राप देता हूं। कि तुम्हारा देह पतन हो जब राजा निमि बोले कि महाराज आपने जो श्राप दिया है। वो इसलिए कि यज्ञ का धन त्वाष्टा ऋषि के पुत्रों जाता जानकर धन के प्रलोभन में आकर आपने श्राप दिया इसलिए गुरु जी आपको भी अपने ब्रह्मतत्त्व का बड़ा अभिमान है। सो मैं भी आपको श्राप देता हूं। कि आपका भी देह पतन हो। इस प्रकार दोनों ने शरीर त्याग किया जब त्वाष्टा ऋषि के पुत्रों ने मंत्र बल से राजा निमि को पुनः जीवित कर लिया जब राजा ने कहा कि हे ऋषि गणो मुझे अब देह बंधन नहीं चाहिए इसलिए आप मेरी देह का मंथन करिए मेरी देह से जो पुरुष उत्पन्न होगा वही तुम्हारा प्रति पालन करेगा ऐसा कहकर राजा निमि ने शरीर त्याग कर नेत्रों के पलकों पर जा विराजे जब ऋषियों ने राजा की देह का मंथन किया जिससे एक दिव्यधारी पुरुष उत्पन्न हुआ जन्मते समय माता न होने से जनक विदेह से उत्पन्न अर्थात् (ब्रह्म में लीन होने से) विदेह तथा मंथन करने से मिथिया मिथिलेस कहलाए तो गुणों के अनुसार नाम है।

लेकिन असली नाम जो रखा आचार्यों ने वो शीलध्वज है। गुरु वशिष्ठ ने देह के त्यागने के बाद मित्रा वरुणा के वीर्य से अगस्त और वशिष्ठ कुंभ यानी घड़ा से ये ऋषि उत्पन्न हुए थे

(पद्मपुराण सृष्टि खंड अ. 22)

उस दिव्य देहधारी पुरुष मिथिलेस को ऋषि गणों ने यज्ञ का परीक्षित बनाकर यज्ञ को पूर्ण किया पिछे राजा मिथिलेस ने तिरुहुत नगर को अपने जेष्ठ भ्राता कुशुमध्वज को देकर आपने विहार में मिथिलापुरी बसाई और जो यज्ञ आचार्य जी थे उनको अपने नगर में बसाया।

और मैथिल ब्राह्मणों की स्थापना की और जो अन्य ब्राह्मण एवम् जो ऋषिगण आए थे वे सब मैथिल नाम से प्रसिद्ध हुए इस प्रकार मैथिल ब्राह्मणों की उत्पत्ति हुई आगे इन मैथिल ब्राह्मणों के चार प्रगति एवम् चार शाखा भई सो इस प्रकार हैं—जैसे

(1) विश्वरूप के वसे तिरुहूत सो नील कंठ मैथिल कहलाए। (2) मौहन्ति के वसे मिथिलापुरी सो मौहन्ति मैथिल हुए। (3) रूपहर के वसे अयोध्या जिनके पक्षधर ओझामैथिल भए। (4) दमन के वसे मथुरा सो मथुरिया मैथिल भए इस प्रकार इन मैथिल ब्राह्मणों की चार शाखा हुई और इन चार शाखाओं को 18 ऋषि गौत्र हैं। और इन मैथिल ब्राह्मणों सात सो बासठ खेरे एवम् मूल ग्राम हैं। इस प्रकार इन मैथिल ब्राह्मणों 762 मूल ग्राम गौत्र हुए अन्यथा जो विश्व के नीलकंठ और मौहन्ति के मौहन्ति मैथिल ब्राह्मण हैं जो मिथिलापुरी दरभंगा बिहार में निवास करते ये ब्राह्मण जाचिक यानी मांगने वाले कर्म अकर्म का दान लेते हैं। और जो रूपहर ऋषि की संतान वसी अयोध्या सो पक्षधर ओझामैथिल कहलाते हैं। और हाल आबाद-ईटावा-आगरा-ग्वालियर-भिन्ड-मुरैना-दतिया-शिवपुरी-आदि जिलों में निवास करते हैं। ये मैथिल ब्राह्मण अजचिक अर्थात् न मांगने वाले हैं। इनका जो ब्राह्मण कर्म है। वो इस प्रकार है। चोटी रखना एवम् यज्ञोपकीत धारण करना विद्या पढ़ना और पढ़ाना दान करना और कराना यज्ञ करना और कराना शास्त्र-पुराण-एवम् वेदों का पाठन एवम् पठन करना और दमन ऋषि के वसे मथुरा एक बार भगवान् कृष्ण जनक पुरी गए थे द्वापर युग में तो सुतदेव नामक एक मैथिल ब्राह्मण ने भगवान् कृष्ण की बड़ी सेवा की सुतदेव के हृदय में श्री कृष्ण ही बसते थे—

दमन ऋषि के 12 पुत्र हुए 1. ब्रह्मऋषि 2. झुर्क ऋषि 3. गमन ऋषि 4.

वाल ऋषि 5. परम ऋषि 6. शौन ऋषि 7. चिम्न ऋषि 8. मेहन्त ऋषि 9. चनूरिषी 10. शोथम (सुतदेव) 11. भुवन ऋषि 12. ब्रध ऋषि आर्या कलावती निमि ऋषि की पुत्री महोलीपुर की दमन ऋषि के पुत्रों के वन उपवन व ताल इन्हीं पुत्रों ने मथुरा जी में 12 वन 24 उपवन और तीन ताल बनाए जिनके नाम निम्न प्रकार हैं।

12 वन	24 उपवन	—	3 ताल
1. मधुवन	1 गौकुल	17 आदि वदी	1 ताल वृक्ष में
2. तल वन	2 गोवर्धन	18 करहला	2 मखारी ताल
3. कनोद वन	3 वर्षाना	19 आजनो खरि	3 राम ताल
4. बहुला वन	4 नंद गांव	20 पिसायो	
5. काम वन	5 संकेत	21 कोकिला वन	
6. खिद्र वन	6 परीमदिरा		
7. वृंदा वन	7 अडीङ्ग	22 दधिवन	
8. भद्र वन	8 शेषसाई	23 कोटी वन	
9. भाडिर वन	9 मांट	24 रावाले	
10. बेल वन	10 उद्धौगांव		
11. लोह वन	11 खेलन वन		
12. महां वन	12 श्री कुंड		
	13 गंधर्व वन		
	14 परासौणी		
	15 विलछू		
	16 वच्छ वन		

दमनं ऋषि के वंशज मथुरा वसने में मथुरिया मैथिलक ब्राह्मण कलहाए और प्रायः मथुरा, आगरा, अमोगढ़, हाथरस, मैनपुरी, ऐटा आदि जिलों में निवास करते हैं।

(मैथिल ब्राह्मण वंश माणिका)

पृष्ठ 7 एवम्

वाव 16 वर्क 101 पादरी

शैरिंग साहब वाव 10

में 316 और 318 वरकों में दिया है।

श्लोक : विश्वकर्मा वैधाता स्वयम्भू तस्थैवच ।

हिरण्यगर्भ आदित्य त्वाष्टा विष्णुः पृजापतीः । ।

पृथक् 2 गुणों के अनुसार पृथक् पृथक् यह आठ नाम विश्वकर्मा ने कहे हैं।

यजुर्वेद अ. 3-4-5-37

ऋग्वेद सूक्त 8-8-41

❀ मैथिल ब्राह्मण वंश प्रकाश ❀

लेखक:

पं० श्री मुरारी लाल शर्मा (जागा)
हिन्डोन करौली (राजस्थान)

प्रकाशक :

पं. श्री नारायण प्रसाद शर्मा
ग्राम बड़पुरा जि. ईटावा (यू.पो.)
निवास : बलवीर नगर, शाहदग,
दिल्ली-110032

1. गौत्र-भारद्वाज, पदवी (शुक्ल) —

ब्राह्मजी के मानस पुत्र अंगिरा हुए अंगिरा के पुत्र बृहस्पति एक पुत्री भुवना ब्रह्मवादि जो ब्राह्मजी के मानस पुत्र धर्म धर्म के पुत्र प्रभास वसु की भार्या हुई जिनके पुत्र महाभाग्या तत्वष्टा जी हुए त्वाष्टा के पुत्र दमन आदि हुए उनके वंश में जो मैथिल ब्राह्मण हैं उनके मूल गौत्र इस प्रकार हैं। इनका ऋषि गौत्र भारद्वाज है। (1) नरवारियां (2) उमरिया (3) जखनया (4) दिहोलिया (5) लाहेरिया (6) कमतरिया (7) कोलेवार (8) किटोनिया (9) कुड़िया (10) चिलोचिया (11) सौरखिया (12) ~~खिखिया~~ (13) खखेलिया (14) खुहरिया (15) खडिहा खडोरे (16) गवारे गंगोरे (17) डेढांकिया डेढवाल (18) दोर (19) ठाकनपुरिया (20) दमधीवार (दमढिरिया) (21) दनेवा दायम (22) दमकरिगारे (23) धोरा धनोकी (24) बिलगौदा (25) वगेरिहा वगैरिया

2. उपमन्यू (पाठक पदवी)

ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ वशिष्ठ के पुत्र महाराज प्रथू हुए प्रथू के पुत्र की कन्या से भद्र पैदा हुए भद्र के पुत्र वसु वसु के पुत्र उपमन्यू हुए उनके वंश में उत्पन्न ओझा मैथिल के मूल गौत्र इस प्रकार हैं

1. एकेवार 2. कटारिया 3. करोडिया 4. गावे 5. पहरिया 6. पौरिया 7. विडेल्यावार 8. भेषायणा 9. रांडे 10. साय कोदिया 11. सामली वाप 12. सागर यानी

3. वशिष्ठ (मिश्र)

ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ हुए वशिष्ठ के 7 पुत्र हुए उनके वंश में उत्पन्न मैथिलों ब्राह्मणों के मूल ग्राम गौत्र इस प्रकार हैं—

1. पोरया 2. कनउआ 3. कनझउआ 4. आटोलिया 5. करोलिया 6. करहरिया 7. दिगरोठिया 8. घूजोरिया 9. वसरईया 10. सहगीतिया 11. छिडोरिया 12. महोलि या वार 13. मंथूरिया 14. भान्डिया 15. मंडीवाल 16. मांडिया 17. डंगइया 18. रोंगा 19. रेशमान 20. राजपुरिया 21. खुमानिया 22. टिहदुरिया 23. सिसोदिया 24. हरियाने 25. हीशाव—

4. गौतम (पांडे)—

अंगिरा ऋषि के कुल में गौतम जी हुए उनके वंश में मैथिलों ब्राह्मणों के मूलगोत्र इस प्रकार हैं— जैसे

अंगिरा ऋषि जिनके दो पुत्र बृहस्पति और उत्तथ्य उत्तथ्य के पुत्र दीर्घातम जन्मांध जिनके पुत्र गौतम हैं। 1. खिरटीक 2. चौकिया 3. विथारिया 4. सूरोटिया 5. वडसरईया 6. कनवसिया 7. वलईया 8. अमोकिया 9. इंटोलिया 10. कुकेडिया 11. टूकवार 12. सुसानिया 13. खुसाडिया 14. पपेहेडिया 15. तैहरिया 16. आरेठिया 17. मुजा संपुरिया 18. वगेहनिया 19. हरदेनिया 20. पन्डोकिया 21. किटोनिया 22. मुखपुरिया 23. सिरोडिया 24. अटोचिय 25. अटागुरे 26. उनसीया 27. अचाडिया 28. उदौलिया 29. कूटर 30. कटिहरे 31. करोटिया 32. कुटरोकिया 33. कुम्हरिया 34. का निगामे 35. काकडिया (करेडिया)

5. भारद्वाज (उपाध्याय)—

महर्षि बृहस्पति के पुत्र भारद्वाज हुए उनके वंश में मैथिल ब्राह्मण के गोत्र निम्न प्रकार से हैं

1. मिहीवार 2. करहलिया 3. जरिहा 4. कचिहा 5. पहीवार 6.

कुरोडिया 12. पिपरोलिया 13. पवइया 14. अटोलिया 15. नगारया 16. वरहिया 17. दौरेटिया 18. मुनजवार 19. खोहरिया 20. अबवूरी वार अलूरीवार 21. अठोचिया अठोनिया 22. उवाने 23. उचतवार 24. उडीवार 25. एकहरिए 26. टूकवार 27. टॉक 28. नानपुरिया 29. पानादिया 30. पडिरहा पंडोसिता 31. वोवावारे 32. वाचनिकेत

6. पाराशर (पाठक)—

महर्षि वशिष्ठ के शक्ति पुत्र हुए शक्ति के पुत्र पाराशर जी हुए उनके वंश के मैथिलों के गोत्र इस प्रकार हैं।

1. पचौरी 2. कामेव्यया 3. ईन्द्रवार 4. सूरिया 5. भंसोरिया 6. मिहिवार 7. बुरोटिया 8. इनमरोलिया 9. वीनवार 10. अरदेनिया 11. अंदनिया 12. सुजोतिया 13. तहनगुरिया 14. नगोलिया 5. जसरेनिया 16. ठरौलिया 17. तारौलिया 18. दसुयनी 19. पंडवाल 20. बलदा 21. वीजन्या 22. वालेडिया 23. विजपुरिया 24. मेहदवार 25. महीवार 26. महोखिया मोहविया 27. सोरावार 28. बेजुआवार 29. वडवडा 30. हिनोचिया

7. भारद्वाज (मिश्रा)

महर्षि ब्राह्मजी के मानस पुत्र अंगारा ऋषि हुए अंगारा ऋषि के पुत्र बृहस्पति हुए उनके पुत्र भारद्वाज पैदा हुए। उनके वंश में मैथिल ब्राह्मण मूल गोत्र इस प्रकार हैं।

1. हरदिया 2. खोखलिया 3. कीतवार 4. बड़ेरिया 5. किखवार 6. कनोसिया 7. सिरोहिया 8. तेनगुरिया 9. मुजेठिया 10. सिरोहिया 11. पाडोलया 12. आरेडिया 13. मुखत्याल चुरिया 14. हिजेलिया 15. हिमसिरिया 16. गुरोहिया 17. नेपालपुरिया 18. वीजोदिया 19. वसुवाडे 20. मांगिया 21.

कश्यप (तिवारी) :—(8)

ब्रह्मा के पुत्र मरीचि, मरीचि के पुत्र कश्यप। उनके वत्सर वत्सर के दो पुत्र हेम्य और नैद्युव हुए। उनके वंश में जो मैथिल ब्राह्मण हुए उनके मूल ग्राम गोत्र इस प्रकार हैं।

1. कुचिहा 2. कश्यप 3. गोंगोरिया गंगेरिया 4. गघोटिया गर्धाठिया 5. धिनोचिया 6. चानी 7. चेंपापा चेंपाया 8. जायवाल 9. डिडोल्या 10. डेला 11. धामा 12. घराणे 13. पामर परमर।

मौद्गल्य चौधरी—(9)

ब्रह्मा के पुत्र अंगिरा। अंगिरा के बृहस्पति उनके वंश में मुद्गल हुए मुद्गल के पुत्र मौद्गल्य हुए उनके वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के ग्राम गोत्र इस प्रकार हैं।

1. खार यास्यार 2. जैतवार जैनवार 3. तालचिडी 4. दीर्घ घोष 5. घेमना धिनुचा 6. नीमचोरिहा 7. पारासरिया 8. वमेल वाल 9. वालखंडी 10. राजतनो 11. राजोल्या 12. मूजौरिया 13. रनभीटांक।

जातुकर्ण (दुबे) —(10)

ब्रह्मा के पुत्र अत्रि। अत्रि के पुत्र भगवान कृष्णात्रेय पुनर्वसु महर्षि हुए। उनके शिष्य जातुकर्ण हुए। उनके वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र निम्न प्रकार से हैं।—

1. आसपाल या सुपाल 2. आसीवाल 3. आसईवार 4. काकट्यन 5. कोलिया 6. घनोरिया 7. नारलोलिया 8. वरवानिया 9. विसाडलवार विसनीवार 10. वविहा वरेवा 11. वनपुरिया 12. वदंडिया 13. वधोलिया।

शांडिल्य (उपाध्याय, ओझा) —(11)

महर्षि कश्यप के पुत्र असित हुए। असित के पुत्र वशिष्ठ हुए यह शांडिल्य गोत्र में प्रधान हुए। इसमें मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र इस प्रकार हैं।

1. गोले
2. गरोठिया गोरेठिया
3. गुनरिहा
4. गुरमेरियां
5. चंदेवा
6. चद्रवाल
7. जाले जालवाल
8. दंडवाल
9. धांगरोलिया दिगरोलिया
10. धौलपुरिया
11. वोदवाल
12. बुद्धलिया
13. वडवाल वाडेवाल्या
14. वेरीवाल

कोण्डिन्य (उपाध्याय ओझा) —(12)

ब्रह्मा के पुत्र मरीचि हुए मरीचि के कश्यप हुए कश्यप के मित्रावरुण उनके वशिष्ठ हुए। वशिष्ठ के कोण्डिन्य हुए कोण्डिन्य के वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र इस प्रकार हैं—

1. उज्जैनवाल उज्जैनियां
2. कालोनियां
3. कादिन्या
4. कूपरवाल
5. कपूरिया
6. कलैया
7. कलौजिया करौतिया
8. कुडरिहा
9. वांकपुरिया
10. मोले मोलैया
11. मनीठिया
12. मीखलोवाल
13. सम्मी

गौतम (उपाध्याय, अवस्थी) —(13)

ब्रह्मा के पुत्र गौतम हुए। गौतम न्याय शास्त्र के प्रथमाचार्य थे। उनके वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र निम्न प्रकार से हैं।

1. आरेवा
2. उत्तमपुरिया
3. उदपुरिया
4. कोईआरे
5. खवडे
6. गुलेरिहा
7. गुतोरिहा
8. घरखिया चखरीवाल
9. चिचीया
10. टाटवोलिया
11. टेहरवार देहरवार
12. डोडरपुरिया
13. पातुरिया परडिया
14. वसुसरिया
15. वसेडिया

अधमर्षण (पाठक) —(14)

ब्रह्मा के पुत्र अत्रि हुए। अत्रि के कुल में विश्वमित्र हुए। उनके पुत्र मधुच्छन्दा हुए उनके अधमर्षण हुए। अधमर्षण के वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र इस प्रकार से हैं—

1. कौशल्य 2. खन्देलवाल 3. गर्वा 4. चरसले 5. टोडर पुरिया 6. टोडावार 7. तिगन्या 8. दज्जडे विज्जडे 9. नीशल 10. भिले भेले 11. लुहरे 12. सिमनामें 13. सिवासमें 14. सोहनपुरिया 15. सकरिडवारे।

वच्छस गोत्र (मिश्र) —(15)

ब्रह्मा के पुत्र अंगिरा हुए। अंगिरा के वंश में वामदेव हुए। वामदेव के वंश में महर्षि वच्छस हुए। वच्छस के वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र इस प्रकार हैं—

1. आलिली अरिल 2. गोठरीवाल 3. झालीलिया 4. झालेवार 5. टिकौरिया 6. वरुली 7. विनोडिया 8. मंडावरिए 9. रेंट 10. सुरवेया 11. सदेया।

वामदेव (राकुर) —(16)

ब्रह्मा के पुत्र अंगिरा हुए। अंगिरा के वंश में वामदेव हुए। वामदेव के वंश में जो मैथिल ब्राह्मण हुए उनके गोत्र इस प्रकार से हैं—

1. कासली वाल 2. कौशलीवाल 3. झटवोला 4. झटवोलिया 5. दसीडिया 6. दण्डवाल 7. नराती 8. ववेरवाल ववेसी 9. मठाविया 10. मठवाल 11. रेनडिया 12. रिनदिया 13. सरोआ।

ऋक्ष (दीक्षित) —(17)

ऋक्षवंश में महर्षि ऋक्ष हुए। ऋक्ष वंश में मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र निम्न प्रकार से हैं।

1. अरुद्धवाल
2. असदिया
3. कालधानी काल्यानआ
4. ढागवाल
5. नसपाल
6. बालधनी
7. मालवाल
8. रोमलीवाल
9. रोमेल्या
10. रोमलीवाल
11. सीधड।

लौगांक्षि (मिश्र) —(18)

ब्रह्मा के वंश में महर्षि लौगांक्षि हुए। लौगांक्षि के वंश में जो मैथिल ब्राह्मण पैदा हुए उनके ग्राम गोत्र इस प्रकार से हैं—

1. कचरिया
2. किंजा
3. कमालपुरिया
4. कमगोरिया
5. खोखी
6. खोखरिया
7. खोहरिया
8. बंधारी धंधीवाल
9. धीमान
10. प्रनालिया
11. फरा
12. वझोडिया
13. मेरानियम
14. सांकरन्या।

वत्स (ओझा) —(19)

ब्रह्मा के पुत्र वत्स हुए। वत्स के वंश में जो मैथिल ब्राह्मण हुए उनके गोत्र इस प्रकार हैं—

1. अठकोलिया 2. आगोलिया 3. अनहोला 4. अकोरा 5. गोदवाल
गुजरातिया 6. चोपल चोपाल 7. चेचेवाल चंचपा 8. जैसवार जासवार 9.
जाहरिया 10. दमन

विद (मिश्र) —(21)

ब्रह्मा के पुत्र भृगु हुए। भृगु के वंश में विदनाम के ऋषि हुए। विद के
वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र इस प्रकार से हैं—

1. आज्जी 2. अगैया 3. कादैया 4. कुसेडिया 5. थम्पीवाल 6. वेनीवाल
वेनेवार 7. माहुर 8. सीलवाल 9. टोडीवाल 10. सोसानियां।

दीर्घतमा (उपाध्याय) —(22)

ब्रह्मा के नानस पुत्र अंगिरा हुए। अंगिरा के उत्तथ्य हुए। उत्तथ्य के
दीर्घतमा हुए। दीर्घतमा के वंश में निम्न लिखित गोत्र मैथिल ब्राह्मणों में पाए
जाते हैं—

1. अमेरिया अमरैया 2. निरीवाल 3. रुढइया 4. रुवाल 5. रुढवाल 6.
फतेहवार 7. मलगामें 8. महदीवार 9. मोपोरी 10. लोहनियां।

गालव (पाठक) —(23)

ब्रह्मा के वंश में महात्मा गालव हुए। गालव के वंश में निम्नलिखित
गोत्र मैथिल ब्राह्मणों के पाए जाते हैं—

1. गुणढरिया 2. गोतेरिया 3. गोहोरिया 4. गृधीनियां 5. वितहोनियां
विल्हैनियां 6. विलगैया 7. विसारिया 8. मजीठिया 9. दहलवाल 10. परिसरे
11. परिपांडे 12. पचोरिया

कौशिक (तिवारी) —(24)

ब्रह्मा के पुत्र अंगिरा हुए अंगिरा के आंगिरस हुए। आंगिरस कुल में कौशिक हुए। कौशिक वंश में निम्न गोत्रों के मैथिल ब्राह्मण पैदा हुए—

1. कुचेनियां
2. करोठिया
3. कुहेरिया
4. गंगारिया
5. गौदनपुरिया
6. गुनराहे
7. झाड़िया
8. टैमनियां
9. दुलारिया
10. नुकर्तीवार
11. नरोदिया
12. निर्घोलिया मकारिया

अंगिरा पांडे —(25)

ब्रह्मा के पुत्र अंगिरा हुए अंगिरा के वंश में निम्न मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र पाए जाते हैं।—

1. आखपा आरोठिया
2. आढोरिया
3. बडोनियां बडोनिहा
4. बडहोटा
5. बुद्धवार
6. बंधनवार
7. बरुआने
8. बडोरे बंधारे
9. विनाआडे
10. विनपाल्ली
11. वनवसे

पाराशर पांडे —(26)

पाराशर ऋषि के कुल में निम्न लिखित गोत्र मैथिल ब्राह्मणों के पाए जाते हैं।

1. कुडरिहा
2. नरउआ
3. नानूरिया नरवरिया
4. नगरिहा
5. नाहने
6. पनसरिया
7. पावारी वरवे
8. पहारिया
9. पिछवाड़े
10. वरोनियां

गौड मिश्र —(27)

गौड वंश में निम्न गोत्र मैथिल ब्राह्मणों के पाए जाते हैं

1. जुगेले
2. जघवार
3. जसरेले
4. ज्वालामुखी टांक
5. दिहोलिया
6. दहलगा
7. बडहोलिया
8. बलाडे
9. विशेषार
10. व्यारिया

चित्रकेतु दुबे—(28)

चित्रकेतु ऋषि के वंश में मैथिल ब्राह्मणों के निम्न ग्राम गोत्र पाए जाते हैं।

1. आलमपुरिया 2. आरंगपुरिया 3. अतरोलिया 4. आसान पुरिया 5. आलनोदिया 6. एगसार 7. एगसासरे 8. गुवरेले 9. वेहटवार 10. निगुरिहा 11. मराढे।

समर्चि तिवारी —(29)

महात्मा समर्चि के वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र इस प्रकार से हैं।

1. आरोलिया 2. खुरिहाखुटा 3. जुझारिया 4. जैतपुरिया 5. फलीदिया 6. फिलुरिहा 7. राओटे 8. राढाढे 9. रेतवाल 10. मुदगर

शौनक धीक्षित—(30)

भृगु वंश में महर्षि शौनक हुए। शौनक के वंश में मैथिल ब्राह्मणों के मूल ग्राम गोत्र इस प्रकार हैं।

1. अंतवाल 2. अलवार 3. अजुआडे 4. अनजिए 5. खुसरोहिया 6. ठमठिरिया 7. नैनागिराया 8. नन्दपुरिया 9. नारोलिया 10. वछोडिया वछेडिहा।

सावर्ण्य मिश्र—(31)

महात्मा सावर्ण्य के वंश में मैथिल ब्राह्मणों के निम्न गोत्र पाए जाते हैं।

1. कचनोआ 2. कचमेरिया 3. कुलीवार 4. कुढोलिया 5. कीयोलिया

6. ककारे के टोके 7. किटोनियां 8. कांहिया 9. कसहेरे 10. कसइया ।

कात्यायन पांडे—(32)

महर्षि कात्यायन के वंश में मैथिल ब्राह्मणों के निम्न मूल ग्राम गोत्र पाए जाते हैं ।

1. इटिहा, 2. इक जोरियां 3. इचोनियां 4. कुलंजिया 5. कुरचनियां 6. कनपुरिया 7. कजुलीवार 8. कुसमरवैया 9. कंगुरगारिया कैमोर गारिया 10. खीग्राम 11. जामान 12. जरादी

गार्ग्य (वाजपेयी) —(33)

यह आंगिरस कुल के एक ऋषि हैं । कैकपदेश के राजा के पुरोहिता थे । इनके वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र इस प्रकार से हैं—

1. आरतीवार 2. अकुर 3. अरोचिया 4. अतौदिया अरवैया 5. कुरचेनियां 6. कडोनियां 7. खेमपुरिया 8. चडरिहा 9. जयरैयां जसेवावार 10. जमरोहिया 11. जिरोनियां 12. मवार ।

वैया ध्रुपदिया (त्रिवेदी) —(34)

महात्मा वैया ध्रुपदिया के वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र इस प्रकार से हैं—

1. अरोठिया वार 2. अर्दया अदिया 3. अग्रहर 4. कडरिएपड 5.

गर्गीय (पांडे) —(35)

ब्रह्मर्षि गर्गीय वंश में निम्न गोत्र मैथिल ब्राह्मणों में पाए जाते हैं—

1. छोर पुरिया 2. छोंगरोइया 3. छतवने 4. छादव 5. जर्तियावार 6. जजुआडे 7. जखोदिया 8. जनुगमें 9. जनक 10. डोरिआरे 11. डरनेहें 12. दूर्इला 13. दढोवार दूमान 14. दोदेरिया 15. दिसोरिया।

यमदग्नि (मिश्र) —(36)

महर्षि यमदग्नि के वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र इस प्रकार हैं—

1. कृटिहा कुटाकूरा 2. कनवाजिया 3. गुधायवार 4. घटवारिया 5. घटलंधा 6. घटवूंद्रा 7. दिखवे 8. दाहिवरे 9. दरिहरे 10. दो किन्तवार 11. नौमोनी 12. नरवाले 13. नमवादे 14. मगोरिहा 15. भटेलें।

गर्ग (चौवे) —(37)

यह एक भारद्वाज गांगिरस कुल के प्रख्यात ऋषि थे। ये कुल के पुरोहित थे गर्ग वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के ग्राम इस प्रकार से हैं—

1. कठगरिया 2. करछनियां 3. कमतार पुरिया 4. कमन गरिया 5. कैलासिया 6. गरसैया 7. छपरियावार 8. वहन गुरिया तेन गुरिया 9. घासीवार 10. घनेलिया 11. नरहरिया 12. निरपाम 13. नगोरे 14. पीलवाई।

कपिल (दीक्षित) —(38)

महात्मा कपिल के वंश में निम्न गोत्र मैथिल ब्राह्मणों में पाए जाते हैं।

1. घईया घोसाने 2. घनघोरिया 3. दिल्लीवार टांक 4. धोवृणा 5. धुर

टांक 6. धरवाल 7. घोघरिया 8. ननोरे 9. पिपरोनिया 10. पनचौमे 11. परचेडिया 12. पवेया 13. पांडोलिया 14. पिपरोहिया—

वत्स (पाठक)—(39)

ब्रह्मा के पुत्र वत्स हुए उनके वंश में निम्न मैथिल ब्राह्मणों के मूल ग्राम गोत्र पाए जाते हैं।

1. वेपचे 2. भूमाहारी 3. मैंन 4. मालगरिया 5. रोलीवाल 6. राय पुरविया 7. लोदइया नदोइया 8. लगोरिहा 9. लहौरिया 10. लोटिया 11. सिलतारिया 12. सिमर घईया 13. सोइनीवार।

कात्यायन (शुक्ल) —(40)

महर्षि कात्यायन के वंश में निम्न ग्राम गोत्र के मैथिल ब्राह्मण हुए।

1. पडवाल 2. बुनेलियावार 3. बदले 4. बांदेला 5. मागरौलिया 6. लेनेकार 7. लिघोरिहा 8. सीक्षामीवार 9. समवलि 10. सीलक 11. मुर्दू 12. सेलाल 13. सोजनियां।

वशिष्ठ (पुरोहित)—(41)

ब्रह्मर्षि वशिष्ठ वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के ग्राम गोत्र निम्न हैं—

1. बुधौलिया भिडयाल 2. रिक्षवाल 3. रोदइयां 4. रिझोरिहा 5. लूरोल्या 6. सहारन शारन 7. सीरूढ़ी 8. समशावादी 9. सजोरिहा 10. सिझोनियां 11. सिमघेइया।

काश्यप (ओझा)—(42)

महर्षि कश्यप के वंश में निम्न गोत्र मैथिल ब्राह्मणों के पाए जाते हैं—

1. बूंदिया बूंदीवाल 2. भुटेरावार 3. भेंसोलिहा 4. लटाइयावर 5. लगोरिहा, लगरिहा 6. सोरखिया 7. सिलटांक 8. सांडरपुरविया 9. सामंडीवाल 10. सोइनवार 11. शकुन 12. सोरानी 13. सरवे ।

कश्यप (दीक्षित)—(43)

महर्षि कश्यप के वंश में मैथिल ब्राह्मणों के ग्राम गोत्र इस प्रकार हैं—

1. वचखी गल 2. ब्रह्मपुरिण ब्रह्मपुरा 3. बुधौरे 4. मुडाजिरे 5. मोकरवाल 6. रावल 7. रुपइया वार 8. सेलरवाल सरियावार 9. सेवाल ठाढलिया 10. सीवाल 11. सिरधन्या 12. सेमा 13. सही टांक 14. सिंगनियां टांक ।

कृष्णात्री (दीक्षित)—(44)

महर्षि कृष्णात्री के वंश में निम्न गोत्र पाए जाते हैं—

1. निथोनियां निथोनियां 22. पदहुपे 3. पंचोरी 4. पटेरिया 5. पडरिहा 65. वरवी 7. वरादेवार 8. विस्तारिया 9. मखतार पुरिया 10. सीधीरिहा ।

मुद्गल (पाठक)—(45)

महात्मा मुद्गल के वंश में मैथिल ब्राह्मणों के मूल ग्राम गोत्र इस प्रकार हैं—

1. वनवसे 2. वपनपुरिया 3. महरोलिया 4. माथूर 5. मीमनिया 6. महावे 7. सिस्सवार 8. सिलधार पुरिया 9. सिरौहिया 10. हाथीवार ।

कण्डव (ओझा)—46

1. मरंडारचें 2. भटोरे भडोरे 3. भटआडे 4. सिंगरवा 5. सुरगन 6. सुपरवी 7. सेनेधार 8. सजुआडे 9. सकरडोंर 10. सोनेवार ।

वत्स (झा)—(47)

महर्षि वत्स के वंश में निम्न गोत्र वाले मैथिल ब्राह्मण हुए—

1. मोहरे 2. भिपरवार 3. माहुले 4. मजालपुरिया 5. मोहरी 6. मडवे 7. मोहरिया 8. मझाडे 9. मिहीवार महिगने 10. मढवाले 11. रावत 12. सहीवर टांक 13. हरिपतये ।

कात्यायन (उपाध्यय)—(48)

महर्षि कात्यायन के वंश में मैथिल ब्राह्मणों के निम्न गोत्र हुए—

1. मारसवार 2. मूनावल 3. माडवार 4. राजपुरिया 5. लाहोरिया 6. लाही 7. लिसेते 8. लभआने 9. मुलहरी 10. सोंसेरिया 11. सिरसोदिया सिरसोरिया ।

सुपर्ण (दीक्षित) —(49)

आंगीरस कुल में से होकर कंडल ऋषि कु पुत्र हैं इनके वंश में मैथिल ब्राह्मणों के निम्न गोत्र पाए जाते हैं—

1. करमहे 2. करअने 3. छेडिया छेइया 4. दिनादीवार 5. देवरीले टांक 6. महलोनियां 7. मुनारिहां मुडरिहा 8. संथरवार 9. रामपुरिया 10. हरहोनियां ।

कौशिक (दुवे)—(50)

सावर्ण्य मनवन्तर में से एक ऋषि हैं इनके वंश में निम्न ग्राम गोत्र वाले मैथिल ब्राह्मण हुए—

1. जर्या 2. जलकी 3. थोमोलिया थोमनियां 4. नोनोतीवार 5. वावसेवार 6. वघरीनियां 7. विठोनियां 8. विलगर 9. वलीरिहा 10. मदाबुलेवार 11. मुतरेले 12. मोहरिया।

गार्ग ओझा—51

आंगीरस कुल के एक ऋषि हैं। इनके वंश में निम्न मैथिल ब्राह्मण हुए।

1. पटेंदिया 2. पुरविया 3. बनरिहा पहाडिया 4. विसानियां वार 5. वैपुरिया 6. वेकमिया 7. वसई वसमें 8. वरवोलिया 9. मडोरिहा 10. महगैयां 11. मोरलिया 12. सरोठियावार।

गौतम ओझा—(52)

अंगीरस कुल में से हैं इनके वंश में मैथिलों के निम्न गोत्र हैं

1. परसरिया 2. वेकनियां वार 3. भालेवार 4. मगरिहा 5. मांगरोलिया 6. मैनपुरिया 7. मेहरवार 8. सारंगपुरिया 9. रदियाम पुरिया 10. मलवारिया 11. साहिपुरिया 12. सिजरिहा

सांडिल्य (मिश्र)—(53)

वशिष्ठ सांडिल्य गोत्र में प्रधान हुए उनके वंश में निम्न गोत्र मैथिल ब्राह्मणों के हुए।

1. परिषिपरे 2. पल्लीवार 3. वरनरिया 4. वीजोरिहा विजोरिहा 5. वरवे 6. वनोरिहा 7. वनपुरिया 8. वीसोरिहा, वीसोलिहा 9. वघरीलिया 10. वरोलिहा 11. वरौदी के टांक 12. वरेछा के टांक 13. भोज पुरिया 14. मानही।

क्र.सं.	पदवी	वेद	प्रवर	शाखा	सूत्र	उपासना देव	देवी
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	भारद्वाज	शुक्ला	यजुर्वेद 3	अंगिरा वृहस्पति भारद्वाज	माध्यान्दिनी	कत्यायन	गौरी नन्दन दुर्गा
2.	उपमन्यु	पाठक	यजुर्वेद 3	भरद्वाज वशिष्ठ इन्द्रपमद	माध्यान्दिनी	कत्यायन	एकदंत दुर्गा
3.	वशिष्ठ	मित्र	यजुर्वेद 3	शक्ति पाराशर वशिष्ठ	माध्यान्दिनी	कत्यायन	नारायण उपाखण्डिदेवी
4.	गौतम	पांडे	यजुर्वेद 3	गौतम आंगिरस औत्तथ्य	कत्यायन	त्रयंबक	भैरवी
5.	भारद्वाज	उपाध्याय	यजुर्वेद 3	अंगिरा वृहस्पति भारद्वाज	कत्यायन	सिद्धेश्वर	भवानी
6.	पाराशर	पाठक	यजुर्वेद 3	वशिष्ठ शक्ति पाराशर	कत्यायन	विनायक	उमा
7.	भारद्वाज	मिश्र	यजुर्वेद 3	अंगिरा वृहस्पति भारद्वाज	कत्यायन	विश्वम्भर	अन्नपू
8.	कश्यप	तिवारी	यजुर्वेद 3	वत्स नेधुय कश्यप	माध्यान्दिनी	कत्यायन	विघ्न विनाशक देवी
9.	मोदगल्य	चौधरी	यजुर्वेद 3	भारम्य अंगिरा मोदगल्य	माध्यान्दिनी	कत्यायन	एकदन्त महेश्वरी
10.	जातुकर्ण	दुवे	यजुर्वेद 3	अत्रि वशिष्ठ जातुकर्ण	माध्यान्दिनी	कत्यायन	गणेश काली
11.	शांडिल्य	उपाध्याय	यजुर्वेद 3	अशित देवल शांडिल्य	माध्यान्दिनी	कत्यायन	सिद्धेश्वर अंबिका
12.	कोडिन्य	ओझा	यजुर्वेद 3	मित्रवरुण वशिष्ठ कोडिन्य	माध्यान्दिनी	कत्यायन	गणपति उमा
13.	गौतम	अवस्थी	यजुर्वेद 3	वृहस्पति अंगिरा गौतम	माध्यान्दिनी	कत्यायन	त्रयंबक भैरवी

	ऋषि	पदवी	वेद	ग्रन्थ	शाखा	सूत्र	उपासना देव	देवी
	1	2	3	4	5	6	7	8
14.	अधमर्षण	पाठक	यजुर्वेद 3	विश्वामित्र मधुच्छन्दा अधमर्षण	मध्यान्दिनी	कत्यायन	एकदन्त	काली
15.	वच्छस	मिश्र	यजुर्वेद 3	ध्ववनभृगु आतवान	मध्यान्दिनी	कत्यायन	अनन्तेश्वर	महेश्वरी
16.	यामदेव	ओझा	यजुर्वेद 3	अंगिरा यामदेव गीतम	मध्यान्दिनी	कत्यायन	काल भैरव	महाकाली
17.	ऋक्ष	दीक्षित	यजुर्वेद 3	अंगिरा वृहस्पति भारद्वाज	मध्यान्दिनी	कत्यायन	सदाशिव	सीतला
18.	लोगांक्षी	मिश्र	यजुर्वेद 3	कश्यप वशिष्ठ वत्स	मध्यान्दिनी	कत्यायन	ईश्वर	ईश्वरी
19.	यत्त	ओझा	यजुर्वेद 3	भार्गव ध्ववन और्व	मध्यान्दिनी	कत्यायन	सदाशिव	उषा
20.	गविष्ठर	दीक्षित	यजुर्वेद 3	अत्रि अर्धनावश गविष्ठर	मध्यान्दिनी	कत्यायन	सिद्ध विनायक	सिद्धेश्वरी
21.	विद	मिश्र	यजुर्वेद 3	भार्गव ध्ववन और्व	मध्यान्दिनी	कत्यायन	विकटेश्वर	पातली
22.	दीर्घतमा	उपाध्याय	यजुर्वेद 3	उतथ्य अंगरिष दीर्घतमा	मध्यान्दिनी	कत्यायन	विनायक	गौरी
23.	गालक	पाठक	यजुर्वेद 3	गालव विश्वामित्र संसेपा	मध्यान्दिनी	कत्यायन	उग्रभैरव	भैरवी
24.	कौशिक	तिवारी	यजुर्वेद 3	विश्वामित्र देवरास उघालक	मध्यान्दिनी	कत्यायन	हरीहर	मातंगी
25.	अंगिरा	पांडे	यजुर्वेद 5	अंगिरा भारद्वाज दार्हस्य व्यापादय	मध्यान्दिनी	कत्यायन	विनायक	मुवनेश्वरी
26.	पाराशर	पांडे	यजुर्वेद 5	पाराशर कृष्णध्रुव वशिष्ठ	मध्यान्दिनी	कत्यायन	विनायक	उषा
27.	गौड	मिश्र	यजुर्वेद 5	वत्स भार्गव आपल जमशग्नि घेवत्स	मध्यान्दिनी	कत्यायन	सदाशिव	अंबिका

	अधि	पदवी	येद	प्रवर	शाखा	सुत्र	उपासना देव	देवी
	1	2	3	4	5	6	7	8
28.	धिप्रकेतु	दुबे	यजुर्वेद 3	धिप्रकेतु, धनेज्या कात्यायन	मध्यादिनी	कात्यायन	सिद्धेश्वर	धूम्रावती
29.	सप्तर्षि	तिवारी	यजुर्वेद 3	वशिष्ठ शक्ति पाराशर	मध्यादिनी	कात्यायन	महेश्वर	अंबिका
30.	शोनल	दीक्षित	यजुर्वेद 3	शुक्र शोनक गार्ग	मध्यादिनी	कात्यायन	विनायक	भद्रकाली
31.	सावर्ण्य	मिश्र	यजुर्वेद 3	उपमन्यु वशिष्ठ सावर्ण्य	मध्यादिनी	कात्यायन	गणेश	काली
32.	कात्यायन	पांडे	यजुर्वेद 3	कात्यायन काम्यकल्प	मध्यादिनी	कात्यायन	विनाशक	सिद्धेश्वरी
33.	गार्ग्य	वाजपेयी	यजुर्वेद 3	गार्ग्य संखे गार्ग्य	मध्यादिनी	कात्यायन	उग्र भैरव	भैरवी
34.	वैयाप्यपदिष्ट	त्रिवेदी	यजुर्वेद 3	वैयाप्य पदिष्ट	मध्यादिनी	कात्यायन	शिव	अंबिका
35.	गार्गीय	पांडे	यजुर्वेद 5	गार्गेकांडिस शांडिल उर्मिबिष्णु	मध्यादिनी	कात्यायन	सिद्धेश्वर	भवानी
36.	यमदग्नि	मिश्र	यजुर्वेद 3	यमदग्नि भृगु शुक्र	मध्यादिनी	कात्यायन	काल भैरव	महाकाली
37.	गर्ग	चांघे	यजुर्वेद 5	गर्ग गार्गेय उर्मि गांधर्व मित्ताल	मध्यादिनी	कात्यायन	भैरव भवानी	
38.	कपिल	दीक्षित	यजुर्वेद 5	आंगिरस बृहस्पति घ्यवन उपमन्यु	कपिल	कात्यायन	सिद्ध गणेश	उषा
39.	वत्स	पाठक	यजुर्वेद 5	भार्गव घ्यवन आसवान जगदग्नि	पाठक	कात्यायन	विश्नाय	दुर्गा
40.	कात्यायन	शुक्ल	यजुर्वेद 3	आंगिरस गार्गेय कात्यायन	पाठक	कात्यायन	शंकर	राती
41.	वशिष्ठ	पुरोहित	यजुर्वेद 3	वशिष्ठ शक्ति पाराशर	पाठक	कात्यायन	महेश्वर	उषा